भजन

तर्ज– बेखुदी में सनम उठ गए जो कदम

इश्क में हो खसम हमको था ये भरम
मिट गए मिट गए मिट ग्ए तुम पे हम

1– मूलमिलावे में बैठक लगी थी,
और वाहेदत की महफिल सजी थी
इतरा के रूहें हक से यूं कह रही थी
आशिकी हमने की,आपसे ए धनी

2– बातें ये सुनकर हंस दिए प्रीतम,
रद बदलें क्यूं करती हो तुम
बेवरा पाओ जाके खेल में अब तुम,
चल पड़ी चाह से माया की राह पे

3– इश्क धनी ने अपना वापिस लेकर,
कहा अब आओ अपने इश्क के बल पर
और चली आओ अपना ईमान लेकर,
इश्क है अब कहां,और कहां है ईमान
क्या कहें क्या कहें,क्या कहें तुमसे हम